उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०- पत्र

दिगंत- भाग-2 गद्य भाग

शीर्षक - सम्पूर्ण क्रान्ति

लेखक - जयप्रकाश नारायण

प्रश्न:- 'सम्पूर्ण क्रान्ति' शीर्षक भाषण का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर:- 'सम्पूर्ण क्रान्ति' शीर्षक लेख 5 जून 1974 के पटना के गाँधी मैदान में दिये गए लोकनायक जयप्रकाशनारायण के भाषण का एक अंश है। सम्पूर्ण भाषण स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में 'जनमुक्ति' पटना के प्रकाशित है। इनका भाषण सम्पूर्ण जनता मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही। भाषण के बाद लोगों के हृदय में क्रान्तिकारी विचार धधक उठे और जन आन्दोलन ने विराट रूप धारण कर लिया। पटना के गाँधी मैदान में फिर न वैसी भीड़ इकट्ठी हुई और न वैसा कोई प्रेरक भाषण हुआ।

अपने भाषण के प्रारम्भ में जयप्रकाश नारायण ने युवाओं को संकेत देते हुए कहा कि हमें तो स्वराज मिल गया है, लेकिन सुशासन के लिए अभी काफी संघर्ष करने होंगे। भाषण के क्रम में उन्होंने नेहरू-जी का उदाहरण दिया। नेहरू जी कहते थे कि सुशासन के लिए देश की जनता को अभी मीलों जाना है। कठिन परिश्रम करने हैं। त्याग करने हैं। जयप्रकाश जी ने कहा कि हमें अभी समाज में भूख, मँहगाई, भ्रष्टाचार जैसे दानव वर्तमान हैं। उनसे हमें लड़ना होगा। आन्दोलन करना होगा।

आन्दोलन को सफल बनाने हेतु उन्होंने युवाओं को आगे आकर नेतृत्व करने की सलाह दी। उन्होंने 'यूथ फॉर डेमोक्रेसी' का आह्वान किया। लोगों के आग्रह पर उन्होंने आन्दोलन के नेतृत्व का दायित्व अपने कंधों पर लिया। उन्होंने जन संघर्ष समितियों को गठन किया। शेष अगले कक्षा में।

डॉ० देव चरण प्रसाद 18/10/20

एसो० प्रो० हिन्दी

रा०अ०सं० महावि० खुरखेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि - श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न:- 'पथिक' की हत्या के उपरांत की स्थितियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- कवि रामनरेश त्रिपाठी ने पथिक की हत्या के बाद की स्थितियों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है। कवि का कहना है कि मानव जीवन नश्वर है यहाँ अर्थात् इस संसार में कुछ भी शाश्वत नहीं है। राजा, रंग, मानी, अभिमानी सबों को एक दिन मृत्यु प्राप्त करनी ही है। यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जो सब दिन यहाँ रहने के लिए आया है।

यहाँ न तो कोई अकिंचन ही बचा न अभिमानी राजा ही बचा है। बड़े-बड़े विद्वान, मूर्ख और सज्जन अन्ततः सभी विदा हो गये। उनलोगों की केवल एक ही वस्तु यहाँ रह गई, वह है उनकी अच्छी-बुरी चर्चाएँ। वे कहाँ गए, किस गुफा में अदृश्य हो गये यह कोई नहीं कह सकता है। उनलोगों ने कभी कोई संदेश हमें नहीं भेजा है। मृत्यु सबसे बड़ी चीज है, क्योंकि इसमें सब कुछ नष्ट हो जाता है।

'पथिक' भी अपने शरीर को त्याग कर न जाने किस अज्ञात देश का वासी हो गया, कौन कह सकता है। जिस दिन से वह गया, सम्पूर्ण देश में उदासी छाई हुई है। लोग अपनी पीड़ा समझते हैं, किन्तु व्यक्त नहीं कर सकते हैं। यह उनकी मजबूरी है। लोग ऊपरी मन से सभी काम करते थे, किन्तु कहीं भी आन्तरिक ~~प्रसन्न~~ प्रसन्नता नहीं थी। उन्हें अन्यायी और अत्याचारी राजा का डर हमेशा बना रहता था। यही कारण है कि वे अपनी व्यथा को भीतर ही झेलते थे।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 18/10/20
रा० उ० सं० म० वि० दुरवसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०हि०-पत्र

जयद्रथ-वध

कवि- श्री मैथिलीशरण गुप्त

साक्षात चराचरनाथ, तुम रखते हो स्वयं जब हो दया,
आश्चर्य फिर क्या जो जयद्रथ, युद्ध में मारा गया?
तो भी इसे सुनकर हृदय में सुख समाता है नहीं,
साधन- सफलता सुख- सदृश सुख- दृष्टि में आता नहीं।।

भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण के वचनों को सुनकर सभी पाण्डव बहुत प्रसन्न हैं। इसी क्रम में युधिष्ठिर काफी प्रसन्न मुद्रा में होकर कहते हैं कि जहाँ चर-अचर के स्वामी स्वयं ही हमारे साथ हैं तथा वे हम पर हर समय कृपा करते हैं तो ऐसी स्थिति में जयद्रथ के युद्ध में मारे जाने में क्या आश्चर्य है। फिर भी जयद्रथ का युद्ध में वध हो गया, यह सुनकर हृदय को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ यह प्रसन्नता अर्थात् खुशी हृदय में समा नहीं पा रही है। वास्तव में इस संसार में साधनों का उपलब्ध होना और उनसे प्राप्त सफलता के कारण उत्पन्न सुख के समान और दूसरा कोई भी सुख इस संसार में नहीं होता है।

कवि का कहना है कि आज युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न हैं। प्रसन्नता होना भी चाहिए। क्योंकि यही वह जयद्रथ था जब अभिमन्यु के साथ सात-सात महारथियों ने एक साथ मिलकर, युद्ध के नियमों का उलंघन करते हुए उस प्रहार किया गया। अभिमन्यु के मृत्य शरीर पर जयद्रथ ने ही गदा से प्रहार किया था। ऐसे जघन्य अपराधी को सजा मिली है। इसलिए पाण्डव श्रेष्ठ श्रीकृष्ण के वचनों को सुनकर अपनी भावना को व्यक्त करते हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद 18/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ